madhvAchAryamate shrIbrahmasampradAyasiddhAntaH

मध्वाचार्यमते श्रीब्रह्मसम्प्रदायसिद्धान्तः

Document Information

Text title : Brahmasampradayasiddhantah with Hindi meaning

File name : brahmasampradAyasiddhAntaH.itx

Category : misc, advice

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : Akash Pandeya

Proofread by : Akash Pandeya

Translated by : Akash Pandeya

Latest update : December 8, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 8, 2023

sanskritdocuments.org

madhvAchAryamate shrIbrahmasampradAyasiddhAntaH

मध्वाचार्यमते श्रीब्रह्मसम्प्रदायसिद्धान्तः

मध्वाचार्यमतश्चाथ द्वैतवादोऽभिधीयते ।
तत्र सर्वोत्तमं तत्त्वं भगवान् विष्णुरेव हि ॥ १॥

श्रीमध्वाचार्य का सिद्धान्त द्वैतवाद के नाम से जाना जाता है । उस मत में सर्वोत्कृष्ट तत्त्व भगवान् श्रीहरि विष्णु ही हैं ।

देशकालानवच्छिन्नः सृष्टिस्थित्यन्तकारकः ।
सविशेषः स्वतन्त्रोऽथ कल्याणगुणसागरः ॥ २॥

वे भगवान् देश-कालादि के बन्धनों से मुक्त, जगत् की सृष्टि, पालन तथा संहार करने वाले, सविशेष (विशेषणों से युक्त), स्वतन्त्र व कल्याणकारी गुणों के समुद्र-

सच्चिदानन्दरूपश्च सर्वज्ञः सर्वशक्तिकः ।
जगतोऽस्य निमित्तत्वं मतं चेशस्य केवलम् ॥ ३॥

सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान् हैं । (माध्व मतानुसार-) ईश्वर इस जगत् के केवल निमित्त कारण माने गये हैं ।

प्रकृतिस्तन्मते विश्वस्योपादानतया मता ।
ईश्वरानुचरो जीवः सच्चिदानन्दरूपवान् ॥ ४॥

श्रीमध्वाचार्य के मत में प्रकृति इस जगत् की उपादान कारण मानी गयी है । (ईश्वर का लक्षण कहने के पश्चात् अब जीव का लक्षण कहते हैं-) जीव ईश्वर का अनुचर अर्थात् दास है तथा ईश्वर की ही तरह वह भी सच्चिदानन्दस्वरूप है ।

अणुर्बद्धस्तथाऽनादिकालान्मायाविमोहितः ।
अज्ञत्वादिकधर्माणामाश्रयः परवाँस्तथा ॥ ५॥

वह जीव अणु परिमाण वाला, बद्ध, अनादि काल से माया से मोहित, अज्ञत्वादिक अनेक धर्मों से युक्त तथा पराधीन है ।

अस्वतन्त्रमथो चेशनियाम्यं तत् तथा जगत् ।
वास्तविको मतो भेदः पञ्चधा स उदीरितः ॥ ६॥

परतन्त्र होने से जीव तथा जगत् ईश्वर से नियम्य हैं अर्थात् ईश्वर ही सभी जीवों तथा इस संसार का नियामक है । (अब भेदों के सम्बन्ध में बतलाते हैं-) माध्व मत में भेद को वास्तविक माना गया है तथा वह पाँच प्रकार का कहा गया है-

जीवेशयोस्तथा जीवाज्जडस्य चेश्वरादपि ।
जीवानाञ्च मिथो भेदो जडानां च परस्परम् ॥ ७॥

१. जीव और ईश्वर का भेद, २. जीव से जड़का भेद, ३. जड़का ईश्वर से भेद, ४. जीवों का परस्पर का भेद तथा ५. जड़ों का परस्पर का भेद ।

भेदावबोधतो विष्णुस्तद्गुणोत्कर्षशेमुषी ।
ततश्चाराध्य विष्णुं तत्प्रसादेनाथ मुच्यते ॥ ८॥

सारे भेदों को जानकर श्रीहरि विष्णु के गुणों के उत्कर्ष से युक्त बुद्धि वाला होकर; भगवान् विष्णु की आराधना करके उन कृपालु भगवान् की कृपा से व्यक्ति भव बन्धन से मुक्त हो जाता है ।

दिव्यलोकं समासाद्य स्वरूपं प्राप्यते तथा ।
तारतम्यं च जीवेषु मुक्तावप्युररीकृतम् ॥ ९॥

दिव्य (वैकुण्ठ) लोक में जाकर उन्हीं के स्वरूप को प्राप्त कर लेता है । मुक्ति में भी जीवों में तारतम्य स्वीकार किया गया है ।

मोक्षस्य साधनं भक्तिः सा च निष्कामभावतः ।
वेदाभ्यासोऽविलासित्वं तथा चेन्द्रियसंयमः ॥ १०॥

मोक्षप्राप्ति का (मुख्य) साधन भक्ति है और वह निष्काम भाव से होनी चाहिये । तथा वेदों का अभ्यास, भोग विलास का परित्याग तथा इन्द्रियों का संयम-

आशाभयपरित्याग ईशायात्मसमर्पणम् ।
सत्या हितपरा वाणी हरेर्दास्ये स्पृहा सदा ॥ ११॥

संसार की आशा तथा भय का परित्याग, ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण, सत्य और हित से परिपूर्ण वाणी, श्रीहरि के दास्य की सदा इच्छा-

दया दानं प्रपन्नस्य विपन्नस्य च रक्षणम् ।
हरौ गुरौ तथा शास्त्रे श्रद्धा दम्भविवर्जिता ॥ १२॥

प्रपन्न (शरणागत भक्त) के प्रति दया, दान आदि और विपन्न (दुःखी) की रक्षा, श्रीहरि, श्रीगुरु और शास्त्र के प्रति दम्भ रहित सच्ची श्रद्धा- ये सब ईश्वर की प्राप्ति के साधन हैं ॥

॥ इति पण्डितसम्राट् श्रीवैष्णवाचार्यप्रणीतं
श्रीब्रह्मसम्प्रदायसिद्धान्तः सम्पूर्णः ॥

अनुवादक- आकाश पाण्डेय

Encoded, proofread, and translated by Akash Pandeya

madhvAchAryamate shrIbrahmasampradAyasiddhAntaH

pdf was typeset on December 8, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*